Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

महीप सिंह की कहानियों में मानवीय सम्बंध

डा० प्रवीन कुमार यादव[9]

हिन्दी साहित्य में कहानी का विशिष्ट स्थान हैं। कहानी का अपना एक अलग अस्तित्व है। साहित्यकार अपनी कहानियों में अपने युग में घटित होने वाली घटनाओं एवं बदलावों को ही कहानी का आधार बनाता है। कहानीकार एक सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्यों के बीच रहकर ही किसी कृति की रचना करता है। लेखक समाज का अभिन्न अंग होने के कारण अपने आस–पास के परिवेश को अत्यंत सूक्ष्मता से जांच परख कर ही उसे साहित्य में परिलक्षित करता है। साहित्य लेखक की अभिव्यक्ति होती है।

डॉ0 नवल किशोर के अनुसारः ''एक बेहतर इन्सानी रिश्ते का संदर्शन ही साहित्य का लक्ष्य हो सकता है। हार्दिक मानवीय संबंधों की अनुपस्थिति के प्रति चिंता का भाव भी इसी संदर्शन का स्वरूप है। यह संदर्शन ही किसी लेखक को मानववादी बनाता है।''[1]

हेतु भारद्वाज के अनुसारः ''मनुष्यों का अन्य मनुष्यों के प्रति सहानुभूति व दया का भाव रखना तथा व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्णतः त्याग कर सामाजिक पर्यावरण के अन्तर्गत अधिकारों व कर्तव्यों का समुचित समंजन करना ही संबंध है।'' [2]

बदलते हुए परिवेश में मानवीय संबंधों को विभिन्न कारकों ने प्रभावित किया है। युग परिवर्तन के साथ–साथ मनुष्य की जीवन दृष्टि में बदलाव के साथ साथ मानवीय संबंधों में भी बदलाव आता रहता है। परिस्थितियों के अनुसार मानव व्यवहार में परिवर्तन होता रहता है। डॉ0 महीप सिंह की कहानियों में मानवीय संबंधों के इस बदलते हुए रूप पर यहां प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात् मानवीय रिश्तों में आए बदलाव की भरसक आहट हमें महीप सिंह की कहानियों में सुनाई देती है। भारतीय समाज में जिन जीवन मूल्यों को आधार बनाकर मानवीय सम्बंध स्थापित हुए थे, आज वही सम्बंध बिखर रहे है। अविश्वास, शंका, औद्योगिकरण, स्वार्थपरता, स्वआश्रित होना इत्यादि इसके प्रमुख आधार है।

आज सम्बंधों के बीच अर्थ का विशेष प्रभाव होता है। कुछ मॉ–बाप अपनी संतान की कमाई पर ही निर्भर रहते है।

''परवरिश के लिए' कहानी की पदमा की मॉ को जरा भी चिंता नहीं है। कि

---

[9] एम०एम, एम०फिल०, पी०एच०डी०, नेट/स्लेट/स्टेट

उसकी बेटी देर रात तक घर से बाहर क्यों रहती है। जब उसे यह मालूम होता है कि पदमा गर्भवती है तो वह अवाक रह जाती है। वह पदमा से कहती है कि '''कलमुंही, अब काम कौन करेगा? और काम नहीं करेगी तो घर की गुजर बसर क्या आसमान से उतरकर तेरा बाप चलाएगा।''[3]

यहां पर हम देखते है कि पदमा की मां को उसके गर्भवती होने की चिंता की अपेक्षा घर चलाने की चिंता है। यह स्वार्थमयी सम्बंध भारतीय मूल्य के परिचायक नहीं है।

'स्वराघात' कहानी में लाला दुनीचंद की जवान बेटी बिमला मर जाती है। लाला दुनीचंद अपने व्यापार में इस तरह व्यस्त है कि घर पर बैठकर मातम मनाना उन्हें बहुत खलता है। लालाजी जल्द से जल्द तेरहवीं को निपटाना चाहते है। वह अपनी पत्नी से कहते है कि–

''किरिया ग्यारवें दिन भी तो हो जाती है। बिमला की मां सोचती है– 'हां'–– लोग ग्यारहवें दिन भी कर लेते है। पर करनी तो तेरहवें दिन चाहिए। तुम मेरा मतलब नही समझीं। ''लालाजी समझाते है– 'मंगलवार कामकाज का दिन है, सारे मिलने – जुलने वाले ठीक तरह से आ भी ना सकेगें ––– और लड़को को भी नाहक दफ्तर से छुट्टी लेनी पड़ेगी।'[4]

'सन्नाटा' कहानी महानगरीय ऊब, एकाकीपन, और संबधों की रिक्तता को दर्शाती है। आज संबंधों की उष्मा को महानगर की भागदौड़ भरी जिंदगी ने नष्ट कर दिया हैं। दिवा और किटी दोनों मां बेटी है। एक ही घर में रहती है, लेकिन सम्बंधों में उष्मा नहीं है। दिवा (मां) कहती है कि–

''साल–छमाही कहीं एक ऐसा दिन आता है, तब कहीं हल्का सा हमसूस होता है कि मेरा भी कोई परिवार है। मैं और किटी मां बेटी हैं। ––– हमारे बीच जब तक कोई तीसरा व्यक्ति ना आ जाए हमें यह अहसास ही नहीं होता कि हम मां–बेटी है।''[5]

'कितने संबंध' कहानी संबंधों में कड़वाहट की कहानी है। मिसेज खन्ना के पति की मृत्यु के बाद सौतेले बेटे का व्यवहार अमानवीय है। ''–– सतिन्द्र और उर्मिल अब उनकी रत्ती भर भी परवाह नही करते, उससे सीधे मुंह बात भी नही करते। खाने की दो रोटियां उसके आगे ऐसे डाल देते हैं, जैसे लोग कुत्ते के आगे डाल देते है।'' [6]

आज के यांत्रिक युग में रक्त संबंधों का व्यवसायीकरण हो चुका है। 'शोक' कहानी मे सागर जी अपने पिता की मौत को अपनी प्रतिष्ठा से जोड़ने का अच्छा अवसर मानता है। परन्तु सुबह में हुई पिता की मौत से थोड़ा परेशान है। उनका कहना है कि – ''अगर पिताजी की मृत्यु शाम को हुई होती तो मैं यह खबर अखबारों में देता जो दूसरे दिन सभी जगह छप जाति उसी के साथ दाह संस्कार का कार्यक्रम छप जाता। लेकिन –– पिताजी तो सुबह–सुबह गुजर गए।'' [7]

'सुर' कहानी में पिता रिटायरमेन्ट के बाद अपने दोनों बेटों के कारोबार में हाथ बंटाने लगते है। परन्तु इस दौरान उसे अपने बेटों से पहले वाला अपेक्षित व्यवहार नहीं मिलता'' ––– उसे महसूस होने लगा कि उसके व्यक्तित्व के साथ ''डैडी'' नाम का जो रंग लगा हुआ है, उसकी चमक हल्की पड़ने लगी है'' [8]

आज की व्यस्त जिन्दगी में अपने बूढे मॉ–बाप के लिए वक्त नहीं है। बूढ़े मां–बाप अकेले रहने को विवश है।

'कल' कहानी का इंदर विधवा मां को घर में अकेली छोड़कर कनाडा जा बसता है। वह साल भर में एक दो पत्र डालकर केवल उन्हें याद कर लेता है।

आज भाई एवं बहनों के बीच पहले जैसा प्यार नही रहा है। जब से स्त्री को पैतृक सम्पत्ति में हक मिला है, तब से यह कटुता और बढ़ गई है। 'नाला' कहानी में बहन की असाध्य बिमारी की हालत में भाई उसे पारिवारिक विकास में बाधा समझता है। बहन महसूस करती हुई कहती है कि ''———— मुझे लगता है कि जैसे मैं एक बहुत बड़ा सा नाला हूँ और भाईसाहब जब भी मेरे पास से गुजरते हैं तो उसे मुझे लांघकर निकलना पड़ता है।'' [9]

'तपिश के मारे' कहानी का गोपाल अपने बड़े भाई की धोखेबाजी से पागल होकर दो जून की रोटी के लिए दर – दर भटकता है। मलिक बाबू जब दिनेश से गोपाल की हालत के बारे में पूछते है तो वह बताता है कि –

''———— तुम इसकी हालत देखकर अचरज कर रहे हो पर तुम्हें शायद पूरी बात मालूम नहीं। कई साल पहले यह पागल हो गया था, बाप के मर जाने पर जब जायदाद का बंटवारा होने लगा तो इसके बड़े भाई ने ब्लैक में कमाया हुआ धन खुद हड़प लिया। उस बात का इस पर असर पड़ा और यह पागल हो गया है।'' [10]

'कितना अजीब' कहानी में अर्थतंत्र का प्रभाव दोस्ती के बीच बाधा बनता है। परमान्द अपने दोस्त की आर्थिक सहायता नही कर पाता, क्योंकि उनकी दोस्ती अभी नई है। इसलिए दोस्त चंद मुलाकातों की दोस्ती पर विश्वास नहीं करता। ''——— तुम कहते हो, इनसे तुम्हारी दोस्ती बस दो तीन मुलाकात की ही है। रूपए उधार मांगने के लिए संबंधों की इतनी पतीली और कच्ची दीवर पर कोई नही चढ़ता।''[11]

''वेतन के पैसे'' कहानी में पत्नी की चिंता वेतन पर अपना अधिकार पाने की है। क्योंकि पति वेतन के पैसे लाकर उसे नही देता। वह सारे पैसे स्वयं रख लेता है। जो थोड़े बहुत उसे देता है, उनका वह हिसाब मांग लेता है। वह सोचता है कि –

''———— सच बात तो यह है कि स्त्री चाहती है कि कमाने का कार्य पति करे, किन्तु उसे रखने और व्यय करने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व उसका हो, एकमात्र उसका। '' [12]

'गमले का फूल' कहानी में निर्मल को अपनी पत्नी का उन्मुक्त व्यवहार पसंद नहीं है। रति उसके दोस्तों के साथ उसकी अनुपस्थिति में ताश खेलती है। तथा उन्हें चाय पिलाती है। इसलिए वह उस पर बरसता हुआ कहता है कि ————

''——— परपुरूषों के साथ बैठकर ताश खेलने में तुम्हें लज्जा नहीं आती? उसने जलती निगाहों से रति को देखा। क्रोध और क्षोभ से उसके होंठ कांप रहे थे। 'परपुरूष ———— ? रति ठगी सी देखती रही, 'वे तो तुम्हारे

बचपन के मित्र है।'' [13]

'लोग' कहानी में पत्नी के 'स्व' को लेकर उनके दाम्पत्य संबंधों में दरार पैदा हो गई है। पत्नी नौकरी करती है, अतः पति को इतना महत्व नहीं देती। पति कहता है–''

''–– नीला से मेरी बहुत अच्छी तरह निभ सकती है–– यदि वह बस थोड़ा सा मेरी भावनाओं की कद्र कर लिया करे। पर पता नहीं क्या बात है कि मुझे हर्ट करने में उसे बड़ा स्वाद आता है। बात–बात में वह मुझे खिझाती है। टीज करती है। अपनी बात वह जबरदस्ती मनवा लेती है, लेकिन मुझें इतना भी भरोसा नहीं रहता हकि मेरे मांगने पर वह एक गिलास पानी भी मुझे पिला देगी।'' [14]

निष्कर्ष : अतः हम कह सकते है कि महीप सिंह जी मुख्यतः सम्बंधों के कथाकार है। संबंधों को देखने की उनकी दृष्टि यथार्थवादी होते हुए भी मूल्यवादी है। महीप सिंह ने संबंधों की टूटन में भी बचे हुए मानवीय संवेदन की तलाश की है। महीप सिंह जी की कहनियों में जीवंतता है। उन्हें अपने परिवेश के जीवंत यथार्थ की पहचान है। महीप सिंह जी ने युग की नब्ज को पहचान कर एक नवीन मानवीय संबंधों की सामाजिक दृष्टि हमें प्रदान की है। उन्होंने मानवीय संबंधों में नष्ट होती कोमलता पर चिंता व्यक्त की है। आज स्वार्थपरता के कारण संबंधो से लोगों का विश्वास टूटता जा रहा है। महीप सिंह जी भारतीय संस्कृति के सजग रक्षक एवं संबंधों में उष्मता के सजग कथाकार है। महीप सिंह जी महानगरीय परिवेश के कथाकार है। उन्होंने वहां के लोगों के संबंधों में बढ़ते तनाव, बिखराव तथा आत्मकेन्द्रिकरण को उजागर किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 नवल किशोर, मानववाद और साहित्य, पृष्ठ–106
2. हेतु भारद्वाज, स्वातंत्रयोत्र हिन्दी कहानी में मानव प्रतिभा, पृष्ठ – 91
3. डॉ0 महीप सिंह, क्षणों का संकट, परवरिश के लिए, पृष्ठ – 41–42
4. डॉ0 महीप सिंह, क्षणों का संकट, स्वराघात, पृष्ठ – 76
5. डॉ0 महीप सिंह सम्बन्धों का सन्नाटा, सन्नाटा पृष्ठ 14–15
6. डॉ0 महीप सिंह, सम्बंधों का सन्नाटा, कितने सम्बंध पृष्ठ – 73
7. डॉ0 महीप सिंह, सम्बन्धों का सन्नाटा, शोक, पृष्ठ – 160
8. डॉ0 महीप सिंह, सम्बन्धों का सन्नाटा, सुर पृष्ठ – 168
9. डॉ0 महीप सिंह, क्षणों का संकट, नाला, पृष्ठ – 202
10. डॉ0 महीप सिंह, सुबह की महक, तपिश के मारे, पृष्ठ – 166
11. डॉ0 महीप सिंह संबंधों का सन्नाटा, कितना अजीब, पृष्ठ – 79
12. डॉ0 महीप सिंह, सुबह की महक, वेतन के पैसे – पृष्ठ – 40
13. डॉ महीप सिंह, सुबह की महक, गमले का फूल, पृष्ठ–157
14. डॉ0 महीप सिंह, क्षणों का संकट लोग, पृष्ठ – 131